

॥ भगवान् राम ॥

सप्तर्षि-मण्डल, करोल बाग, दिल्ली
द्वारा
श्री राम के आदर्श जीवन की
सुंदर नाट्य प्रस्तुति

भारतीय संस्कृति की मर्यादा • राम का सच्चा स्वरूप
आह्लादकारी संगीत • रोमांचकारी अभिनय • अभूतपूर्व निदर्शन

सूत्रधार (Direction)
डॉ. हरवंश लाल ओबराय

प्रबंधक
श्री प्रतापसिंह

संगीत
श्री मनोहर लाल

वेश-भूषा (Make up)
श्री विद्या सागर

चित्रकला (Photography)
डॉ. हरवंश लाल ओबराय

विविध
श्री धारा सिंह

सप्तर्षि मण्डल की
नाट्य प्रस्तुति

॥भगवान् राम॥

कलाकार :

1.	राम	श्री विद्या सागर
2.	दशरथ	श्री मनोहर लाल
3.	कैकेयी	श्री प्रताप
4.	सीता	श्री सुखदेव
5.	सुमित्रा	श्री धारा सिंह
6.	लक्ष्मण	श्री विवेक सहगल
7.	वाल्मीकि	हरवंशलाल
8.	वशिष्ठ	श्री धासिंह
9.	विश्वामित्र	श्री धारा सिंह
10.	व्याध	प्र. सिंह
11.	ताड़का	श्री सिंह
12.	भरत	श्री मनोहर

यत्पादपङ्कजरजः श्रुतिभिर्विमृग्यं
यन्नाभिपङ्कजभवः कमलासनश्च।
यन्नामसाररसिको भगवान्पुरारिस्तं
रामचन्द्रमनिशं हृदि भावयामि॥

प्रथम दृश्य

महर्षि वाल्मीकि समाधि में :

नमामि रामं, रघुवंशनाथं....
माता रामो मत्पिता राम चन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुर्नान्यं
जाने नैव जाने न जाने!

—हे राम! मुझे आपका स्मरण करते युग बीत चले, मेरे प्यासे नयन तृषित चातक के समान आपके सुंदर स्वरूप के दर्शन के इच्छुक है। यदि अब भी कहीं कृपा करके मुझ पातकी जीव को दर्शन दे देंगे तो अपने आपको शतशः धन्य मानूँगा।

(राम दर्शन)—पुष्प-वर्षा

राम : हे ऋषिप्रवर! तेरी तपश्चर्या सफल हुई। मैं कभी भी अपने भक्तों के हृदय से दूर नहीं रहता। अभी-अभी स्वर्ग में देवताओं की सभा हुई जिसके सभापति स्वयं प्रजापति ब्रह्मा जी थे, वहाँ देवताओं ने इस पवित्र भारती वसुंधरा पर हो रहे दैत्यों के अत्याचारों पर बड़ा क्षोभ प्रकट किया तथा प्रार्थना की कि शीघ्र ही असुरों का नाश कर के भारत भूमि का उद्धार किया जाए। हे महर्षि! वहाँ उस सभा में स्वयं भारतमाता ने आंसू बहाते हुए केश बिखेर कर प्रजापति से यह याचना की कि शीघ्र ही उसके संताप को हरा जाय। भारत माँ की वह करुण दशा देखकर मैंने शीघ्रता से अपने धनुष-बाण को उठाया तथा कहा—कि हे मां! मैं तेरी गोद में जन्म लेकर शीघ्र तेरी सर्व विपदाएं हर लूंगा, तू तनिक भी चिंता न कर। भरत खण्ड अवतारों की जन्मस्थली है, मैं अपने प्रचण्ड सायकों (बाणों) से तेरे शत्रुओं का शिरोच्छेदन करूँगा। हे महर्षि वाल्मीकि! मैं शीघ्र ही इस भूतल पर सूर्यकुल शिरोमणि महाराज दशरथ के गृह में प्रकटूँगा। आप वन में जाना वहाँ एक घटना के प्रभाव से आपके मन से एक काव्य का अमृत प्रवाह बह निकलेगा, जिसका रसास्वादन कर प्रत्येक भारतवासी धन्य-धन्य मानेगा।

वाल्मीकि : हे प्रभो! मैं धन्य हो गया। आज मेरे नयन सनाथ हो गये। मैं आपकी आज्ञानुसार वन में जाऊँगा तथा आपकी प्रेरणा से ही आपका गुणानुवाद गाऊँगा। हे प्रभो! मुझे ज्ञान का वरदान दीजिए। (राम-अंतर्धान)

(वन की ओर जाना—दो पक्षी कल्लोल कर रहे हैं—चू कू कूहूं....चू.... चू....चू....।)

एक व्याध धनुष पर बाण चढ़ाकर फेंकता है। वह क्रौञ्च मर जाता है। सी....सी....(वाल्मीकि रामायण का पहला श्लोक)

वाल्मीकि....आह! ओ दुष्टः आह

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः कासमोहितम्॥

ओ पापी व्याध! तू शाश्वत काल तक प्रतिष्ठा को मत प्राप्त हो क्योंकि तूने काम से मोहित क्रौञ्च पक्षी के जोड़े में से एक को मार दिया।

व्याध! शाश्वत काल प्रतिष्ठा को न प्राप्त हो।
क्यों क्रौञ्च पक्षी युगल में से एक को बेधा?

(**आकाशवाणी :** हे ऋषि वाल्मीकि! तू कृतकृत्य हुआ। स्वाभाविक ही आपके मुख से जो शब्द निसृत हो चले हैं, वह संस्कृत साहित्य काव्य का आदि छन्द—अनुष्टुप छंद होगा तथा आप द्वारा लिखा जाने वाला भगवान् राम का गुणानुवाद संस्कृत साहित्य का आदि काव्य होगा)—पुष्प वर्षा

वाल्मीकि : मा निषाद प्रतिष्ठां....क्या सचमुच यह आदि काव्य का आदि छंद होगा! वह निषाद कौन-सा होगा—क्या मैं निपट मूर्ख, भगवान् राम का गुणानुवाद लिख सकूँगा? हाँ, प्रभु के कृपा कोर से क्या असंभव है?

राम तुम मानव हो, ईश्वर नहीं हो क्या?
विश्व में रमे हुए नहीं सभी कहीं हो क्या?
तब मैं निरीश्वर हूँ ईश्वर मुझे क्षमा करें,
तुम न रमो तो मन तुम्ही में रमा करे॥

तनिक सोचूं तो कि इस छंद का क्या-क्या अर्थ होगा—

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः....

व्याध! शाश्वत काल तक प्रतिष्ठा को न प्राप्त हो।
क्यों क्रौञ्च पक्षी युगल में से एक को मारा?

रामायण के आदि में—**निषाद :** महाराजा दशरथ ही होंगे। वह अंधे माता-पिता के, क्रौञ्च युगल के प्राण प्यारे श्रवण को बाण से बेधेंगे....आः....आः....राम....हे निषाद! तू शाश्वत काल तक....

फिर दासी मंथरा निषाद कन्या बनेगी—री मति भ्रष्टे मंथरा! तू शाश्वत काल तक प्रतिष्ठा को प्राप्त मत हो—तूने राम-भरत के प्रेम युगल को फोड़ दिया।

फिर पापी रावण निषाद बनेगा—ओ दुष्ट! तू शाश्वत काल तक प्रतिष्ठा को प्राप्त मत हो—तू राम-सीता की जोड़ी में एक को हर ले गया।

हे राम! तू धन्य है...मानो मेरे मस्तिष्क में कुछ आलोक आ गया हो।

व्याध शाश्वत काल तू प्रतिष्ठा को लाभ न कर
क्यों क्रौञ्च पक्षी युगल में एक को मारा।

हे राम! जो तू व्याध नहीं है शाश्वत काल तक प्रतिष्ठा को प्राप्त हो क्योंकि तूने बाली तथा तारा नामक कौञ्च पक्षियों की जोड़ी में से एक को मारा।

हे राम, तू निषाद नहीं है। तू शाश्वत काल तक प्रतिष्ठा को प्राप्त हो क्योंकि तूने रावण तथा मंदोदरी नामक क्रौञ्च पक्षियों की जोड़ी में से एक को मारा।

हे प्रभो! तुझे शतशः प्रणाम।

मुझ मूर्ख के मुख से स्वतः निकले हुए शब्द छंद बन गये तथा उसमें से अनेकों अर्थ स्वयमेव निसृत होते चले गये।

राम! तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाए सहज संभाव्य है।

(पुस्तक, लेखनी)

स्वर्ग से भी आज भूतल बढ़ गया।
भाग्य-भास्कर उदयगिरि पर चढ़ गया॥
हो गया निर्गुण सगुण साकार है।
ले लिया अखिलेश ने अवतार है॥
भक्त वत्सलता इसी का नाम है।
और वह लोकेश लीला धाम है॥
पथ दिखाने के लिए संसार को।
दूर करने के लिए भू भार को॥
सफल करने के लिए जन दृष्टियाँ।
ईश करता है स्वयं निज सृष्टियाँ॥
असुर शासन शिशिरमय हेमंत है।
पर निकट ही राम राज्य वसंत है॥
पापियों का जान लो अब अंत है।
भूमि पर प्रकटा अनादि अनन्त है॥
धन्य दशरथ-जनक-पुण्योत्कर्ष है।
धन्य भगवद्भूमि भारत वर्ष है॥

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला, कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनिमनहारी अद्भुत रूप बिचारी॥
लोचन अभिरामा, तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी॥
कह दुई कर जोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना वेद पुरान भनंता॥
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता॥

(बालकाण्ड दोहा—191 का छंद 1-2)

द्वितीय दृश्य

वीरव्रत

वनमार्ग : ऋषि विश्वामित्र तथा राम-लक्ष्मण।

विश्वामित्र : हे वीर राजकुमारो! यह आपका परीक्षा स्थल है। इस बीहड़ जंगल में दो मार्ग जाते हैं। एक मार्ग अत्यंत सरल तथा सुहावना है, स्थान-स्थान पर कूप, तड़ाग तथा बावड़ियां व बगीचे हैं, किंतु यह अत्यंत लंबा है। तथा यह एक दूसरा छोटा मार्ग हैं जो अत्यंत भयानक है। इस मार्ग में बड़े-बड़े 14,000 असुर रहते हैं जो मनुष्य को बिना चबाए ही निगल जाते हैं। आप सूर्यवंशी राजकुमार बतलाएं कि क्या इस कंटकाकीर्ण मार्ग को अपनायेंगे अथवा सुगम मार्ग पर पग रखेंगे।

राम : गुरुवर्य! हम क्षत्रिय हैं तथा असुरों के नाश के हेतु ही हमारा वन आगमन हुआ है। हम सदा इस भयानक कंटकाकीर्ण मार्ग पर चलने को उद्यत होंगे, ताकि हमारे धनुष-तूणीर को कोई आखेट मिल सके।

(पुरुष-वर्षा)

विश्वामित्र : वह देखो विकराल जाबड़ों वाली ताड़का राक्षसी आ रही है। शीघ्र ही शर सन्धान करें।

लक्ष्मण : किंतु गुरुवर, स्त्री का वध करना?

—यह स्त्री नहीं महादुष्टा है, इसका वध करो।

आज्ञा पालन। शर-संधान!

तृतीय दृश्य

कैकेयी-दशरथ

दशरथ :

कहा गत धैर्य होकर भूपवर ने—
चली है देख तू क्या आज करने।
अभागिन! देख क्या कोई कहेगा।
यही चौदह वर्ष वन में रहेगा।
विभव पर हाय तू भव छोड़ती है,
भरत का राम का जुग फोड़ती है।
मरूँगा मैं तथा पछताएगी तू,
यही फल अंत में बस पायेगी तू॥

राम :

अरे! यह बात है तो खेद क्या है
भरत में और मुझ में भेद क्या है?
करें वह प्रिय यहां निज कर्म-पालन
करूँगा मैं विपिन में धर्म पालन।
मुझे था आप ही बाहर विचरना
धरा का धर्म-भय था दूर करना।
मुझे यह इष्ट है चिंतित न हो तुम!
पड़ूँगा आग में भी जो कहो तुम!

(पुष्प-वर्षा)

चतुर्थ दृश्य

आदर्श माता

(सुमित्रा-लक्ष्मण संवाद)

सुमित्रा :

रामं दशरथं विद्धि, मां विद्धिजनकात्मजाय।
अयोध्यांमत्वीं विद्धि, गच्छ तात् यथा सुखम्॥

हे पुत्र! तुम्हारे भ्राता राम वन में जा रहे, उनका अनुकरण करो।

पुत्र! यदि वन में तुम्हें पिताजी की याद आवे तो श्री राम के ही दर्शन कर लेना। वन में वे ही आपके पिता तुल्य हैं। हे पुत्र! यदि मुझ माता के प्रेम से हृदय तड़प उठे तो मेरे दर्शन तुम जानकी देवी के दर्शन में कर लेना, उनको माता तुल्य जानना। यदि अयोध्या के महल तथा अट्टालिकाएं याद आवें तो वन को ही अयोध्या नगरी समझना।

हे पुत्र! तू सुखपूर्वक जा!

लक्ष्मण : हे माता! आपकी आज्ञा शिरोधार्य है।

(पुष्प-वर्षा)

वन चले राम रघुराई!

(राम-लक्ष्मण-सीता)

पंचम दृश्य

भरत मिलाप

(भरत, राम के चरणों में)

भरत : हे प्रभो! मेरी अधिक परीक्षा मत लीजिए। मुझ दास की प्रार्थना मान कर अयोध्या में चल अपना राज्य ग्रहण कीजिए। आप बिना सारी अयोध्या नगरी प्राणहीन-सी हो रही है। मैं आपके चरणों के स्नेह बिना जलहीन मछली के समान तड़प कर प्राण त्याग दूँगा। राज्य आपश्री की धरोहर है, इसे कृपा कर ग्रहण कीजिए।

राम :

मैं राज्य भोगने, नहीं भुगाने आया
नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया।
संदेश नहीं मैं यहां स्वर्ग का लाया।
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।
मैं आर्यों का आदर्श बताने आया,
विश्वासी का विश्वास बचाने आया॥
मैं आया जिसमें बनी रहे मर्यादा,
बच जाय प्रलय से, मिटे न जीवन सादा।

सुख देने आया, दुःख झेलने आया
मैं मनुजपने का नाट्य खेलने आया।

भरत :

हा! इसी अयश के हेतु जनन था मेरा,
निज जननी ही के साथ हनन था मेरा।
तनु तड़प तड़प कर तप्त पिता ने त्यागा।
भ्रातृ वनवास का हेतु बना मैं अभागा।

राम :

चिरकाल राम है भरत-भाव का भूखा
पर उसको तो कर्तव्य मिला है रूखा!
जिस पर है अपने प्राण पिता ने त्यागे,
मैं भी अपना प्रण-वचन निबाहूँ आगे।
इस रघुकुल में जो वचन दिये जाते हैं,
वह प्राण चढ़ा कर पूर्ण किये जाते हैं।
क्यों भरत! तुम्हारे प्राण खिन्न होते हैं।
भावना तथा कर्तव्य भिन्न होते हैं।

हे प्राण प्यारे भरत! मैं स्वर्गीय पिता का आदेश पालन करने के लिए ही वन में आया हूँ। आपकी प्रेम भरी भावना का मैं आदर करता हूँ किंतु भावना से कर्तव्य ऊँचा है।

भरत-हे प्रभो! यदि आप कर्तव्य से बंधे हुए अयोध्या वापस नहीं लौट सकते तो मुझ चरण कमलों के दास को अपनी पूज्य पादुकाएं ही प्रदान करें। मैं 14 वर्ष तक उनकी ही पूजा करके आपकी प्रतीक्षा करता रहूँगा, किंतु यदि 14 वर्ष के पश्चात् आपने कुछ देरी की तो अपने इस दास को जीवित न पा सकेंगे।

राम :

प्रियतम बंधु! यह लो। (पादुका देते हैं)

वाल्मीकि :

कृपा करि प्रभु पांवरी दीन्हीं।
सादर भरत शीष धरि लीन्हीं।

(पुष्प-वर्षा)

—हे भरत! तेरे समान बंधु न आज तक हुआ है, न होगा। मेरी यह भविष्यवाणी है कि तेरे पादुका-पूजन का आदर्श विश्व के इतिहास में अपनी तुलना नहीं पा सकेगा।

राज्य के लिये भाई, भाई के रक्त के प्यासे रहते आए हैं। तथा जब तक मनुष्य का स्वार्थ जीवित है, तब तक यही सब कुछ होता रहेगा। पर भरत, आदर्श भ्राता भरत तू शत बार धन्य है! तुमने पवित्र भ्रातृप्रेम के आदर्श की स्थापना की है। हे शस्य स्यामला भारत भूमि, भरत सम पुत्र रत्नों के कारण ही तेरा गौरव बढ़ेगा।

षष्टम दृश्य

राम : हे भ्राता लक्ष्मण! किष्किंधा पर्वत से यह आभूषणों की गठरी मिली है। मेरी प्राण प्रिया जानकी को दुष्ट राक्षसराज रावण हर कर ले गया है। तनिक पहचानो तो यह आभूषण उन्हीं के है क्या?

लक्ष्मण :

नामि जानामि केयूरे, नामि जानामि कुण्डले
नूपुरं एव जानामि, नित्यं पादाभिवंदनात्।

हे प्रभो! मैं सदा जानकी माता के चरणों के दर्शन करता रहा हूँ, अतः उनके मुख के केयूर-कुण्डल तथा हार तो मैं पहचान नहीं सकता। हाँ केवल पांवों के कंकण पहचान सकता हूं।

(पुष्प-वर्षा)

सप्तम दृश्य

दुष्ट निकन्दन राम

राम :

हे दुष्ट रावण! तूने जानकी का अपहरण करके, न केवल मेरे स्वाभिमान पर आघात किया है, अपितु संपूर्ण भारतवर्ष की आर्य संस्कृति की पूज्य प्रतिमा भारतीय नारी का अपमान किया है। मैं केवल एक नारी जानकी के अपमान का प्रतिशोध नहीं कर रहा हूँ किंतु एक बार तेरे दसों शीशों को धूलि में मिलाकर, तेरी सुवर्णमयी लंका को धूल-धूसरित करके, मैं इस विश्व के सकल राष्ट्रों के लिये यह शिक्षा छोड़ जाना चाहता हूं कि भविष्य में भी यदि कोई व्यक्ति अथवा राष्ट्र भारतीय नारी की ओर आँख उठाकर भी देखेगा तो उसे तुम्हारे समान कुल समेत यमलोक पहुँचा दिया जायेगा—यही नहीं, उसकी सुवर्ण लंका भी जला कर राख कर दी जायेगी।

ओ दुष्ट!....अब मेरे तीक्ष्ण सायक (बाण) तेरा पापी रक्त पियेंगे। अब तेरे गर्वीले मस्तक धूलि चाटेंगे तथा आने वाली भारतीय संतानें सदा के लिये तेरी पाप की कहानी की निंदा करती रहेंगी।

दुष्ट! अब अपने पूरे बल के साथ मेरा सामना कर।

रावण वध

(पुष्प-वर्षा)

वाल्मीकि : धन्य, हे दुष्ट निकन्दन राम!

लक्ष्मण-हे प्रभो! हमें अयोध्या से आए 14 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। संभवतः भरत ने अयोध्या पर अधिकार कर लिया होगा। शायद हमें वह अयोध्या में घुसने भी न दे। हमने बहुत परिश्रम करके यह लंका द्वीप जीता है। आओ, हम यहीं रहकर अपने जीवन के बाकी क्षण आराम से बिताएं।

राम :

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

हे लक्ष्मण! यह सोने की लंका मुझे तनिक भी अच्छी नहीं लगती। अपनी सदा वत्सला मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर आनंद देने वाली है। इसके सिवा भ्राता भरत पर मुझे पूर्ण विश्वास है। मैंने 14 वर्ष पश्चात् लौट आने का उसे वचन दिया है।

रघुकुल रीति सदा चली आई।
प्राण जाय पर वचन न जाई॥

एवं इस लंका का अधिपति तो विभीषण हो सकता है।

वाल्मीकि : धन्य धन्य....

अष्टम दृश्य

आदर्श नारी

सीता :

हे अग्नि देव! यदि मैंने भूल से भी राम के सिवा किसी अन्य पुरुष का चिंतन किया हो तो मुझे इसी समय अपनी प्रचण्ड ज्वालाओं में जलाकर राख कर दो।

(**आकाशवाणी होती है**)

हे राम! सती साध्वी सीता सर्वथा निष्कलंक है। इस पर कदापि संदेह मत करो। यह सदा भारतीय नारी का आदर्श मानी जायेगी। (पुष्प-वर्षा)

वाल्मीकि : दिव्य यज्ञ में देकर निज बलि,

सीता निकली....

बलिदान से हुआ

क्या बिना यज्ञ....

नवम दृश्य

प्रजापालक राम

वशिष्ठ!

राम : हे मेरी प्रिय प्रजाओ! आज से मैं इस सूर्यवंश का राज्यपद ग्रहण करता हूँ। मैं आप लोगों के रक्षण के लिये सदा कर्तव्य भाव से उद्यत रहूँगा। मेरे राज्य में किसी को किसी प्रकार के दैहिक, दैविक तथा भौतिक संताप नहीं होंगे। पिता के जीते जी पुत्र कभी न मरेंगे तथा किसी को चोर-डाकू का भय न होगा। कोई निर्धन से निर्धन जन भी बिना अन्न के भूखों न मरेगा।

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकानां मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा॥

आप लोगों के रञ्जन के लिये स्नेह, दया, सुख, ऐश्वर्य तथा प्राण प्यारी जानकी तक का त्याग करने में भी मुझे कोई दुःख न होगा।

(पुष्प-वर्षा)

सभा :

महाराज रामचन्द्रजी की जय

वाल्मीकि :

नमामि राम रघुवंशनाथम्

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे

रघुनाथाय नाथाय सीताया पतये नमः॥

राम तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य है।

सांखला प्रिंटर्स, बीकानेर